हिन्दुस्तान

आईवीएफ ने खोले मातृत्व के नए द्वार: प्रो. मीनू सिंह

ऋषिकेश, संवाददाता। एम्स में बांझपन के प्रति जागरूकता बढ़ाने, इसके कारण और रोकथाम के उद्देश्य से विश्व आईवीएफ दिवस मनाया गया। जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने कहा कि चिकित्सा विज्ञान में इलाज की आधुनिक तकनीकों के उपयोग से अब बांझपन समस्या नहीं रहा और आईवीएफ तकनीक के माध्यम से इसका इलाज संभव है।

शनिवार को एम्स ऋषिकेश में विश्व आईवीएफ दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का संस्थान की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में

एम्स ऋषिकेश में धूमधाम से विश्व आईवीएफ दिवस मनाया

बांझपन को दूर करने हेतु आईवीएफ एक उन्नत तकनीक है और इसके परिणाम भी बहुत अच्छे हैं। उन्होंने निःसंतान दंपतियों के लिए इस सुविधा को लाभकारी बताया। स्त्री एंव प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष प्रो. जया चतुर्वेदी ने बताया कि 25 जुलाई 1978 को इंग्लैंड में दुनिया की पहली आईवीएफ बच्ची लुईस जॉय ब्राउन का जन्म हुआ था। जबकि भारत में 3 अक्टूबर 1978 को पहली टेस्ट ट्यूब बेबी ने इस तकनीक से जन्म लिया था।

अमर उजाला

आईवीएफ तकनीक ने बढ़ाई निसंतान दंपतियों की उम्मीद

ऋषिकेश। बांझपन को लेकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों और गलतफहमियों को दूर करने तथा आधुनिक उपचार तकनीकों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से शनिवार को एम्स में विश्व इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) दिवस मनाया गया।

विशेषज्ञ चिकित्सकों ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आईवीएफ जैसी उन्नत तकनीकों ने निसंतान दंपतियों के लिए माता-पिता बनने की उम्मीद को मजबूत किया है। शनिवार को कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया।

स्त्री एवं प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष प्रो. जया चतुर्वेदी ने कहा कि आईवीएफ दिवस मनाने का उद्देश्य लोगों के मन में बांझपन को लेकर मौजूद डर, मिथक और गलत धारणाओं को दूर करना है। डीन रिसर्च शैलेंद्र कुमार हांडू ने कहा कि आईवीएफ केवल गर्भधारण का अवसर नहीं देता, बल्कि गंभीर बांझपन का सामना कर रहे दंपतियों के लिए उम्मीद और संतान प्राप्ति का विकल्प भी उपलब्ध कराता है। सेंटर में उपचार के

विश्व आईवीएफ दिवस पर बांझपन के उपचार व आधुनिक तकनीकों की दी जानकारी

एम्स में आईवीएफ से जन्मे नौ बच्चे

- एम्स ऋषिकेश में उपलब्ध आईवीएफ सुविधा के जरिये अब तक कई निसंतान दंपतियों को संतान सुख मिला है। आईवीएफ सेंटर की फैकल्टी डॉ. लतिका चावला ने बताया कि केंद्र में उपचार के बाद अब तक 15 आईवीएफ गर्भधारण हुए हैं और नौ स्वस्थ शिशुओं का जन्म हो चुका है। वहीं आईयूआई और ओवुलेशन के माध्यम से जन्म लेने वाले शिशुओं की संख्या भी करीब 50 हो चुकी है। उन्होंने बताया कि आईवीएफ सुविधा का लाभ लेने की इच्छुक महिलाएं एम्स के गायनी विभाग की ओपीडी के माध्यम से पंजीकरण करा सकती हैं। प्रत्येक बुधवार दोपहर दो बजे से आईवीएफ की विशेष ओपीडी संचालित की जाती है।

बाद संतान प्राप्त करने वाले कुछ दंपतियों को सम्मानित किया गया। संवाद

स्वतंत्र चेतना

विश्व आईवीएफ दिवसः आधुनिक तकनीक से निःसंतान दंपतियों को मिल रही नई उम्मीद : प्रो. मीनू सिंह

स्वतंत्र चेतना

ऋषिकेश। विश्व आईवीएफ दिवस के अवसर पर एम्स ऋषिकेश में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आईवीएफ (इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन) तकनीक ने बांझपन के उपचार को नई दिशा दी है। अब नि:संतान दंपतियों के लिए माता-पिता बनने की उम्मीद पहले से कहीं अधिक मजबूत हुई है। कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि आईवीएफ तकनीक ने उन दंपतियों के जीवन में नई खुशियां लाने का मार्ग प्रशस्त किया है, जो प्राकृतिक रूप से संतान सुख प्राप्त नहीं कर पाते। उन्होंने लोगों से बांझपन को सामाजिक कलंक नहीं, बल्कि एक चिकित्सीय समस्या मानते हुए समय पर विशेषज्ञ परामर्श लेने की अपील की। स्त्री एवं प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष प्रो. जया चतुर्वेदी ने बताया कि 25 जुलाई 1978 को दुनिया की पहली आईवीएफ शिशु लुईस जॉय ब्राउन के जन्म की स्मृति में यह दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य बांझपन से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करना और लोगों को आधुनिक उपचार पद्धतियों के प्रति जागरूक बनाना है। आईवीएफ केंद्र की विशेषज्ञ डॉ. लतिका चावला ने बांझपन के कारणों, उपचार की आधुनिक तकनीकों तथा उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी देते हुए बताया कि एम्स ऋषिकेश में अब तक आईवीएफ के माध्यम से 15 सफल गर्भधारण और 9 स्वस्थ शिशुओं का जन्म हो चुका है, जबकि आईयूआई एवं ओव्यूलेशन उपचार से 50 शिशुओं का जन्म हुआ है। कार्यक्रम में आईवीएफ उपचार से संतान प्राप्त करने वाले दंपतियों को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर डीन रिसर्च प्रो. एस.के. हांडू सहित गायनी विभाग के चिकित्सक, नर्सिंग अधिकारी और बड़ी संख्या में स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहे।